International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 3; May 2018; Page No. 08-10

भारतीय कहानीकार प्रेमचन्द एवं श्री लंका के कहानीकार मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में प्रयुक्त ग्रामीण तथा अन्य भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. आर. के. डी. निलंति कुमारी राजपक्ष
ज्येष्ठ व्याख्याता, भाषा, संस्कृति एवं रंग कला अध्ययन विभाग, श्री जयवर्धनपुर विश्वविद्यालय, गंगोडविल, नुगेगॉड, श्री लंका।

प्रस्तावना

प्रेमचन्द हिंदी कहानी साहित्य में एक दीपस्तंभ के रूप में हैं। उन्होंने अपनी तीन सौ कहानियों के माध्यम से आदर्शवाद, यथार्थवाद, शहर, देहात, स्त्री पुरुष, बच्चे तथा समाज के विभिन्न वर्गों का चित्रण बड़ी कुशलता से किया। उनके साहित्य में समाजोभिमुखता, आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, सर्वहारा वर्ग के प्रति सहज करुणा, गांधीवाद का प्रभाव, राष्ट्रीय चेतना आदि लक्षण देखे जा सकते हैं। प्रेमचन्द की भाषा सरल, सहज और व्यावहारिक होने के साथ ही अपने प्रदेश की बोली से भी प्रभावित दिखाई देती है, जिस कारण इनकी कहानियों में हिंदी के साथ–साथ अंग्रेजी, अरबी, फारसी और अन्य भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग दिखाई देता है। इन्होंने अपनी कहानियों में उन्हीं शब्दों को अधिकाधिक रूप में प्रयोग किया है जो जन–सामान्य में रच–बसे हैं।

उपन्यास, कहानी, आलोचना, तथा पत्रकारिता आदि क्षेत्रों में विशिष्ठता प्राप्त साहित्यकार मार्टिन विक्रमसिंह 'सिंहली का महा लेखक' नाम से जनता का गौरव–पात्र हो चुके हैं।

1890ई. में ज़िला 'गाल्ल' 'कॉग्गल' गाँव में उनका जन्म हुआ। वे पालि, संस्कृत तथा अंग्रेजी भाषाओं के विद्वान थे।

'ऑवा सितुमिण' उपदेशात्मक ग्रंथ उनकी पहली कृति है। उन्होंने 1914 ई. में अपना पहला उपन्यास 'लीला' की रचना की। 1924ई. में 'गॅहॅणियक' नाम से उन्होंने अपना पहला कहानी–संग्रह प्रकाशित किया। उनके उपन्यासों में 'रोहिनी', 'सीता', 'मिरिगुदिय', 'विरागय', 'बव तरणय' आदि उल्लेखनीय हैं। उन्होंने 1949ई. में सबसे श्रेष्ठ 'गम्पेरलिय' उपन्यास की रचना की। उसी कथा को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने 'कलियुगय' तथा 'युगांतय' की रचना की। 'हदँ साक्कि कीम', 'पव्कारयाट गल गॅसीम', 'वहल्लु' तथा 'मगे कताव' उनके उल्लेखनीय कहानी–संग्रह हैं। उनसे विरचित 'मडॉल दूव' एक बहुचर्चित उपन्यास है। 'सत्व संततिय', 'विद्या–विनोद–कथा' तथा 'कुरा कुहुबुँ सत्तु' उनके द्वारा विचित विज्ञान संबंधी कथाएँ हैं।

'उपन दा सिट' उनकी जीवनी से संबंधित उपन्यास है। 'सिंहल साहित्यये नॅगीम', 'सिंहल नवकताव हा जपन काम कथा हेवनॅल्ल' आदि आलोचना–ग्रंथों को प्रकाशित करके उन्होंने सिहली साहित्य की सेवा की। वे कभी श्री लंका के 'दिनमिण' तथा 'सिलुमिण' समाचार पत्रों के संपादक थे। उनका देहावसान 1976ई. में हुआ।

प्रेमचन्द की कहानियों में प्रयुक्त संस्कृत शब्द

प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। उनकी कहानियों में संस्कृत शब्द प्रयुक्त हुए हैं। यथा उपदेश, निपुण, सूक्ति वाण, शक्ति, प्रातःकाल, बंधन, प्रथम, अभिमान, बुद्धि, भोर, अभिप्राय, भूमण्डल, स्वामी, चक्रवर्ती, स्वर्ग, व्यर्थ, परीक्षक, शिक्षा, परीक्षा, अत्याचार, छात्र, निबंध, अध्यापक, अनुभव, भयभीत, परिश्रम, भावना, लाभ, पथिक, विद्वान, दुःख, आत्म–गौरव, श्रद्धा, कर्तव्य, प्रतीक्षा, रत्न, वैदिक, यज्ञ, ब्रह्मभोज, परमो, धर्मः, सदिच्छा, अभिलाषा, हृदय, आसक्त, हृष्ट–पुष्ट, पदार्थ, मातृभूमि, रजकण, धर्मशाला, स्मरण, कमंडलु, प्रभावोत्पादक, सौभाग्य, गंगा, गंगा–स्नान, अस्थि, आकांक्षा, विसर्जन, क्षमा, मुखमंडल, प्राणद.ड, निःशुल्क, निर्विघ्न, पंडिताइन, ओम शांतिः, शास्त्रार्थ, सज्जन, पाडित्यपूर्ा, निमंत्रा, गोमूत्र, पवित्र, मुक्ति, साधन, निःसंदेह, चित्त, ब्रह्म, ग्रहण, अनुष्ठान, भाग्यवान, पुत्र, पुत्रवधू, पोथी, महान, पुरुष, स्रोत, मधुर, संगीत, भंडार, अनंत, गृहस्थी, दुःख, असारता, पश्चाताप, निष्कपट, प्रतिष्ठित, अक्षरशः, रक्षक, निद्रा मग्न, उपेक्षा, निष्ठा–भाव, अर्द्धांगिनी, वृद्ध, श्रृंगार।

मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में प्रयुक्त संस्कृत शब्द

मार्टिन विक्रमसिंह कई भाषाओं के विद्वान थे। उन्होंने अपनी कहानियों में कई भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया। संस्कृत के महान पंडित होने के कारण संस्कृत शब्द भी उनकी कहानियों में आते हैं। उनकी कहानियों में प्रयुक्त संस्कृत शब्द निम्न प्रकार हैं– प्रतिरूपय[1], शयनासनय[2], प्राणय[3], भार्याव[4], अधर्म मर्दन[5], आरूढ[6], शांत सुखय[7], यथोक्त[8], मिथ्याव[9], अन्यालाप[10], अलौकिक[11], विचित्र वर्ण[12], जीव प्रवाह[13], दैवज्ञ[14], दर्पण तलय[15], गर्वित[16], मृत देहय[17], बुद्देन्द्रिय[18], प्रत्यक्ष[19], असन्तुष्टिय[20], परिभव[21], विचित्र कथकयकु[22],

---

[1] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(नॅन्दम्मागे योजनाव), पृ. 443
[2] वही.
[3] वही.
[4] वही पृ.444
[5] वही पृ.449
[6] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(सॅपविदींम), पृ.516
[7] वही.
[8] वही पृ.517
[9] वही.
[10] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(पवुकारयाट गल गॅसीम), पृ.570
[11] वही.
[12] वही.
[13] वही.
[14] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(पालु अम्बलम), पृ.585
[15] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(अबिरहस), पृ.721
[16] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(हिस्कबल), पृ.742
[17] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(मव), पृ.775
[18] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(कुवेणिहामि), पृ.820

अनितय धर्मय[23], असाद्र वू[24], नेत्र युग्मय[25], दृढ़[26]।

प्रेमचन्द की कहानियों में प्रयुक्त अंग्रेज़ी शब्द

प्रेमचन्द ने अपनी रचनाओं को सशक्त बनाने के लिए कहीं–कहीं अंग्रेज़ी शब्दों का भी प्रयोग किया। उनकी कहानियों में प्रयुक्त अंग्रेज़ी शब्द निम्न प्रकार हैं– हाकी मैच, टास्क, सुपरिटेंडेंट, लीडर, टाइम–टेबिल, डाक्टर, हेडमास्टर, स्कीम, आक्सफोर्ड, डिग्री, क्लर्क, स्कूल, बोर्डिंग हाउस, सेके.ड क्लास, स्टेशन, ग्रामर, रिफ्रेशमेंट, रूम, अर्जेंट, फीस, होस्टल, कॉलेज, कान्स्टेबिल, स्टोव, आमलेट, कम्पोजीशन, लैम्प, पार्ट, टिकट, इण्टर, फुटबाल, गार्ड, रिसीव, ट्रंक, वालीबाल, स्टेशन, ग्रेजुएट, फेल, पास, डी–एस–पी–, स्ट्रेचर, इंस्पेक्टर, फुलस्केप, डबल, क्वीन्स पार्क, रेजीडेंट, नंबर, टूथ पाउडर, ब्रुश, फलावर, शो, मोटरकार, अपील, अफसर, मिस्टर, प्लेटफार्म, ट्राम, रिपोर्ट, जनरल, सिगार केस, पोजिशन, वाइफ, रूल, नेटिव, सेक्रेटरी, मैजिस्ट्रेट, होम मेंबर, होस्टल, रबर, मशीन, बैरिस्टर, मेस, फादर, मदर, कोट, पैंट, कालर, बूट, हैट, गारंटी, डेरी, फार्म, ड्रामेटिक कंपनी, ड्रामा, कैंप।

प्रेमचन्द की कहानियों में प्रयुक्त अंग्रेज़ी वाक्य

1. "what an idiot you are Bir"[27]
2. "यू ब्लडी"[28]

मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में प्रयुक्त अंग्रेज़ी शब्द

विक्रमसिंह की कई कहानियों में अंग्रेज़ी शब्द भी मिलते हैं। लेकिन उन्होंने अंग्रेज़ी शब्दों का कम प्रयोग किया। उनकी कहानियों में प्रयुक्त अंग्रेज़ी शब्द निम्नलिखित हैं– गर्ल[29], टिकट प्लीज[30], इन्स्पॅक्टर[31], टॉनिक् लॅमनेड[32], कैरियर[33], बैरिस्टर[34], वर्नाकुलर[35], राइट[36], ड्रायवर[37], शेम्पेन[38], वाटर[39], ड्राई[40],,ड्वान्स[41], मोल्टड् मिलक्[42]।

मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में प्रयुक्त अंग्रेज़ी वाक्य

1. ॲसिडा डार्लिंग कम वी विल गो होम।[43]
2. व्हाट डिड् यू से।[44]
3. यू से यू कम दे आर विद योर फादर।[45]
4. आई सैड आई एम नाट कमिन। आई विल डू वट फादर टैल्समी टुडू।[46]
5. वी आ नॉट रस्टड पिपल।[47]

प्रेमचन्द की कहानियों में प्रयुक्त अरबी और फारसी तथा ग्रामीन शब्द

प्रेमचन्द की कहानियों में बहुत सारे शब्द हैं जो अरबी और फारसी भाषा से आए हैं। उन्होंने अपना रचना कर्म उर्दू भाषा में शुरू किया। बाद में वे हिंदी के लेखक बने। इसलिए उनकी रचनाओं में बहुत सारे अरबी और फारसी शब्द मिलते हैं। जैसे– बुनियाद, मजबूत, हरदम, तस्वीर, नकल, इबारत, दरअसल, जमात, इलाज, जवाब, हर्क, कसूर, रोज, बेहद, मजा, बरबाद, जिगर, हिम्मत, निराशा, जरा, जिन्दगी, खराब, इरादा, खूब, हिसाब, नसीहत, फजीहत, खबर, नजर, इम्तहान, हमदर्दी, जाहिर, गुलामी, बादशाह, गायब, ख्याल, खुदा, पनाह, फर्क, खुराफात, किफायत, तमीज, ताज्जुब, तकदीर, अदब, बेतहाशा, मुहताज, जहर, अख्तियार, हाजिर, मशहूर, मुनाफा, तमीजदार, जायदाद, बेदर्दी, बर्दाश्त, बदतमीजी, हैसियत, इलजाम, कायरता, तजुर्बेकार, किस्मत, राजी, रुखसत, मशहूर, फुरसत, मुसाफिर, तलाश, तकदीर, खूबी, रिआसत, इस्तीफा, जल्लाद, किस्म, फसाद, मकसद, मुआमला, नाजुक, हसरत, अदब, फायदा, लिहाज, दिलजमई, मुमकिन, नफरत, गाफिल, जिंदा, कब्र, फर्श, तबीयत, बेकाबू, ताबीज, अरमान, इत्तफाक, फातिहा, फुरसत, अफीम, तबाह, मिजाज, मिन्नतें, हताश, मेहरबानी, फुरसत, हकीम, गम, गुलजार, गफलत।

प्रेमचन्द विशेष रूप से ग्रामीण जीवन का निरूपण करने वाले कहानीकार हैं। इसलिए उनकी कहानियों में ग्रामीण भाषा का पुट दिखाई देता है। "यह रॉड पछुआ न जाने कहाँ से बरफ लिये आ रही है।"[48], "उसने जोर से आवाज लगायी – लिहो! लिहो! लिहो!"[49], "तुम्हारे मडैया डालने से क्या हुआ।"[50], "पेट में,ऐसा दरद हुआ कि मैं ही जानता हूँ।"[51], "गोई को बाँधकर कब तक खिलाओगे?"[52], "यह सब लच्छन कुछ अच्छे थोड़े ही हैं।"[53]

मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में प्रयुक्त ग्रामीण भाषा

ग्रामीण भाषा का प्रयोग मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों की एक प्रमुख विशेषता है। उन्होंने तत्कालीन समाज में प्रचलित देहाती

---

[19] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(सिंहल नडुव), पृ.253
[20] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(समाजवादिया), पृ.317
[21] वही पृ.318
[22] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(केस्वॅटिय), पृ.376
[23] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(मॅटि कलय), पृ.397
[24] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(बुदुरैस), पृ.360
[25] वही.
[26] वही.
[27] प्रेमचंद– प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खंड़–1 (नशा), पृ.72
[28] गेयनका, कमल किशोर, सं., प्रमचंद–देशप्रेम की कहानियाँ, (पत्नी से पति), पृ. 130
[29] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(धातु कोलाहलय), पृ. 130
[30] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(केदिरि गै मलकदँ), पृ. 134
[31] वही पृ.138
[32] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(मुदियन्से मामा), पृ.289
[33] वही पृ.291
[34] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(सिंहल नडुव), पृ.253
[35] वही पृ.255
[36] वही पृ.257
[37] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(मुदियन्से मामा), पृ.279
[38] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(कुरक्कन पान), पृ.594
[39] वही.
[40] वही.
[41] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(नॅन्दम्मागे योजनाव), पृ. 449
[42] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(सल्लि), पृ.165
[43] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(सिंहल नडुव), पृ.256
[44] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(सिंहल नडुव), पृ.256
[45] वही.
[46] वही.
[47] वही पृ.257
[48] कालिया, रवींद्र, सं., प्रेमचंदः किसान जीवन संबंधी कहानियाँ (पूस की रात), पृ. 22
[49] वही पृ.25
[50] कालिया, रवींद्र, सं., प्रेमचंदः किसान जीवन संबंधी कहानियाँ (बलिदान), पृ.26
[51] कालिया, रवींद्र, सं., प्रेमचंदः किसान जीवन संबंधी कहानियाँ (बलिदान) पृ.26
[52] वही पृ.32
[53] प्रेमचंद– प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खंड़–1 (तेंतर), पृ.508

भाषा का प्रयोग अपूर्व ढंग से किया है। विशेष रूप से दक्षिण समुद्राश्रित प्रदेशों में प्रचलित ग्रामीण भाषा उनकी कहानियों में विद्यमान है। कहानी की विषयवस्तु और पात्रोचित ग्रामीण भाषा के प्रयोग में वे सिद्धहस्त थे। जैसे– पहन लें[54], देख लें[55], तू[56], घर में आ जा[57], नारियल पानी[58], वे कौन लोग हैं।[59], चबा नहीं सकते क्या।[60], लो थोड़ा–थोड़ा खा ले।[61], यह तो सच है।[62], थोड़ा इंतजार कर।[63], यह तो।[64], बाहर निकल जा।[65], तुझपर वज्रपात हो।[66], तू–तू छोड़ूँगी नहीं चुड़ैल।[67], तेरे मुँह में वज्रपात हो जाय।[68], पी ले बेटा पी ले।[69], तुझे शरम नहीं आती आता है पेट के बल पर।[70], तू कहाँ मर गया।[71], चल बस।[72], तुझे खाना हो तो मेरे घर आ जा।[73], तू चला जा।[74], घर चला जा।[75], सो गई।[76], आ जा।[77], पैसे दे।[78], देने को कह दे।[79], तुझे तो।[80], क्यों बे।[81], देने से मना किया।[82], सचमुच।[83], गधापन।[84]

समग्रत

प्रेमचंद तथा मार्टिन विक्रमसिंह का भाषा कौशल प्रशंसनात्मक है। दोनों कई भाषाओं के विद्वाान थे। वे अपनी कहानियों से पाठकों को प्रभावित करने में सफल हुए। उन्होंने ग्रामीण जीवन के चित्रण के लिए देहाती भाषा का प्रयोग किया और प्रेमचंद ने शहरी जीवन के चित्रण के लिए अंग्रेजी मिश्रित हिंदी तथा मार्टिन विक्रमसिंह ने अंग्रेजी मिश्रित सिंहली भाषा का प्रयोग किया। दोनों की रचनाओं में अंग्रेजी और संस्कृतनिष्ठ भाषा प्रयुक्त हुई है। सरल विचारों को प्रकट करने के लिए सरल वाक्यों का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार दोनों रचनाकार उचित भाषाओं का प्रयोग करके वे अपनी रचनाओं को अर्थपूर्ण और रसपूर्ण बनाने में सफल हुए।

[54] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(मुदियन्से मामा), पृ.275
[55] वही.
[56] वही.
[57] वही पृ.276
[58] वही पृ.277
[59] वही पृ.282
[60] वही.
[61] वही पृ.291
[62] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(मॅटि कलय), पृ.397
[63] वही पृ.396
[64] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(लेलि), पृ.327
[65] वही पृ.328
[66] वही पृ.326
[67] वही पृ.333
[68] वही.
[69] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(सल्लि), पृ.159
[70] वही पृ.160
[71] वही पृ.162
[72] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(बलयन मॅरीम), पृ.248
[73] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(बेगल), पृ.680
[74] वही पृ.682
[75] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(बेगल), पृ.682
[76] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(उपासकम्मा), पृ.627
[77] वही पृ.630
[78] वही पृ.632
[79] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(कुरक्कन पान), पृ.601
[80] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(पवुकारयाट गल गॅसीम), पृ.514
[81] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(मगुल कीम), पृ.554
[82] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(गहेन वॅटुनु मिनिहत् वेदा), पृ.524
[83] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(अहिंसावादिया), पृ.504
[84] विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह केटिकता एकतुव(बुदुरैस), पृ.357

संदर्भ

1. कालिया, रवीन्द्र.(सं.), (2012), प्रेमचंद– स्त्री जीवन संबंधी कहानियाँ, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन.
2. प्रेमचंद, (2008), प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खंड–1, इलाहाबाद, सुमित्र प्रकाशन.
3. प्रेमचंद, (2008), प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खंड–2, इलाहाबाद, सुमित्र प्रकाशन.
4. प्रेमचंद, (2011), मानसरोवर– भाग एक से आठ तक, नयी दिल्ली, स्टार पब्लिकेशनस.
5. सिंहली
6. विक्रमसिंह, मार्टिन. (2012), कता अहुर, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम.
7. विक्रमसिंह, मार्टिन. (2011), गॅहॅनियक सह तवत् कता, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम.
8. विक्रमसिंह, मार्टिन. (2012), तोरागत केटि कता1, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम.
9. विक्रमसिंह, मार्टिन. (2012), पवुकारयाट गल् गॅसीम, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम.
10. विक्रमसिंह, मार्टिन. (2012), मगुल गेदर, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम.
11. विक्रमसिंह, मार्टिन. (2012), हदँ साक्कि कीम, राजगिरिय, सी. स. सरस समागम.